**Paper II: Hindi & Essay**

**Time: 3 hrs , Max marks :200**

**All questions are compulsory. All questions carry equal marks.  
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं सभी प्रश्नों पर समान अंक हैं/**

**Q1 किसी एक विषय पर 400 शब्दों में निबंध लिखिए: 50 marks**

**1 Recent economic reform in india (हाल में भारत में हुए आर्थिक सुधार)**

**2 Uses and abuses of social media .( सामाजिक मीडिया के दुरुपयोग और उपयोग)**

**3. Swachh bharat abhiyan.** **स्वच्छ भारत अभियान**

**4. Judicial activism.** **न्यायिक सक्रियता**

**5. Natural calamities in Uttarakhand.** **उत्तराखंड में प्राकृतिक आपदाएँ**

**Q2**  a) **टिप्पणी की विशेषता बताते हुए एक उदाहरण के द्वारा समझाए /**

**b) निविदा क्या होती है? एक प्रारूप दीजिए /**

**Q3**  योग संतुलित तरीके से एक व्यक्ति में निहित शक्ति में सुधार या उसका विकास करने का शास्त्र है। यह पूर्ण आत्मानुभूति पाने के लिए इच्छुक मनुष्यों के लिए साधन उपलब्ध कराता है। संस्कृत शब्द योग का शाब्दिक अर्थ 'योक' है। अतः **योग को भगवान की सार्वभौमिक भावना के साथ व्यक्तिगत आत्मा को एकजुट करने के एक साधन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।** महर्षि पतंजलि के अनुसार, योग मन के संशोधनों का दमन है।

योग अभ्यास और अनुप्रयोग तो संस्कृति, राष्ट्रीयता, नस्ल, जाति, पंथ, लिंग, उम्र और शारीरिक अवस्था से परे, सार्वभौमिक है।यह न तो ग्रंथों को पढ़कर और न ही एक तपस्वी का वेश पहनकर एक सिद्ध योगी का स्थान प्राप्त किया जा सकता है। **अभ्यास के बिना, कोई भी यौगिक तकनीकों की उपयोगिता का अनुभव नहीं कर सकता है और न ही उसकी अंतर्निहित क्षमता का एहसास कर सकते हैं।** केवल नियमित अभ्यास (साधना) शरीर और मन में उनके उत्थान के लिए एक स्वरुप बनाते हैं। मन के प्रशिक्षण और सकल चेतना को परिष्कृत कर चेतना के उच्चतर स्तरों का अनुभव करने के लिए अभ्यासकर्ता में गहरी इच्छाशक्ति होनी चाहिए।

**योग मानव चेतना के विकास में एक विकासवादी प्रक्रिया है**। कुल चेतना का विकास किसी व्यक्ति विशेष में आवश्यक रूप से शुरू नहीं होता है बल्कि यह तभी शुरू होता है जब कोई इसे शुरू करना चुनता है। शराब और नशीली दवाओं के उपयोग, अत्यधिक काम करना, बहुत ज्यादा सेक्स और अन्य उत्तेजकों में लिप्त रहने से तरह-तरह के विस्मरण देखने को मिलते हैं, जो अचेतनावस्था की ओर ले जाता है। भारतीय योगी उस बिंदु से शुरुआत करते हैं जहां पश्चिमी मनोविज्ञान का अंत होता है। यदि फ्रॉयड का मनोविज्ञान रोग का मनोविज्ञान है और माश्लो का मनोविज्ञान स्वस्थ व्यक्ति का मनोविज्ञान है तो भारतीय मनोविज्ञान आत्मज्ञान का मनोविज्ञान है। योग में, प्रश्न व्यक्ति के मनोविज्ञान का नहीं होता है बल्कि यह उच्च चेतना का होता है। वह मानसिक स्वास्थ्य का सवाल भी नहीं होता है, बल्कि वह आध्यात्मिक विकास का प्रश्न होता है|

**I) उपर्युक्त का उचित शीर्षक बताए/**

**II) सारांश की विशेषता बताते हुए उपर्लिखित गध्यांश का सारांश लिखिए**

**III) रेखांकित अंशों की व्याख्या करें/**

**Q4 TRANSLATE FROM HINDI TO ENGLISH. हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करें**

इजराइल के मुकाबले भारत में जल की उपलब्धता पर्याप्त है। लेकिन वहां का जल प्रबंधन हमसे कहीं ज्यादा बेहतर है। इजराइल में खेती, उद्योग, सिंचाई आदिकार्यों में रिसाइकिल्ड पानी का उपयोग अधिक होता है। इसीलिए उस देश के लोगों को पानी की दिक्कत का सामना नहीं करना पडता। भारत जैसे विकासशील देश में80% आबादी की पानी की जरूरत भूजल से पूरी होती है और इस सच्चाई से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि उपयोग में लाया जा रहा भूजल प्रदूषित होता है। कईदेश, खासकर अफ्रीका तथा खाड़ी के देशों में भीषण जल संकट है। प्राप्त जानकारी के अनुसार दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में रह रहे करोड़ों लोग जबरदस्त जल संकट कासामना कर रहे हैं और असुरक्षित जल का उपयोग करने को मजबूर हैं। बेहतर जल प्रबंधन से ही जल संकट से उबरा जा सकता है और संरक्षण भी किया जा सकता है।

भारत में भी वही तमाम समस्याएं हैं जिसमें पानी की बचत कम, बर्बादी ज्यादा है। यह भी सच्चाई है कि बढ़ती आबादी का दबाव, प्रकृति से छेड़छाड़ और कुप्रबंधन भी जल संकट का एक कारण है। पिछले कुछ सालों से अनियमित मानसून और वर्षा ने भी जल संकट और बढ़ा दिया है। इस संकट ने जल संरक्षण के लिए कई राज्यों की सरकारों को परंपरागत तरीकों को अपनाने को मजबूर कर दिया है। देश भर में छोटे- छोटे बांधों के निर्माण और तालाब बनाने की पहल की गयी है। इससे पेयजल और सिंचाई की समस्या पर कुछ हद तक काबू पाया जा सका है। भारत में तीस प्रतिशत से अधिक आबादी शहरों में रहती है। आवास और शहरी विकास मंत्रालय के आंकड़े बताते हैं कि देश के लगभग दो सौ शहरों में जल और बेकार पडे पानी के उचित प्रबंधन की ओर तत्काल ध्यान देने की जरूरत है। इसके कारण सतही जल को प्रदूषण से बचाने के उपाय भी सार्थक नहीं हो पा रहे हैं। खुद जल संसाधन मंत्रालय भी मानता है कि ताजा जल प्रबंधन की चुनौतियों लगातार बढती जा रही है। सीमित जल संसाधन को कृषि, नगर निकायों और पर्यावरणीय उपयोग के लिए मांग, गुणवत्तापूर्ण जल और आपूर्ति के बीच समन्वय की जरूरत है।

Q5 Translate from English to hindi. अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करें

September 5 is observed as Teachers’ Day in honour of Dr. Sarvepalli Radhakrishnan ,the second President of India, who was born on that day. But how did it get instituted? Dr. Radhakrishnan’s 75th birthday on September 5, 1962 came within weeks of his being elevated to the President’s post. He was flooded with felicitations from home and abroad, a testimony to his wide reputation as professor and exponent of Indian philosophy. But above all, he is a great teacher, from whom all of us have learnt much, and will continue to learn”, stated Prime Minister Jawaharlal Nehru in his message. But Dr. Radhakrishnan wished that his 75th birthday should not be celebrated as such. It is should the observed as Teachers’ Day in honour of the noble profession he had been attached with throughout his career. The Teachers’ Day was instituted thus in 1962.

Every year the President of India gives away National Awards to teachers on September 5. It is awarded to outstanding teachers of primary, middle and higher secondary schools in recognition to their meritorious services. Not only is the academic efficiency recognized, but genuine interest/affection towards children, reputation in local community and involvement in social life of the community also considered.

India has a long tradition of venerating the teachers. In the Vedic times the students were taught at teacher’s home, serving him in their free time. It was called Gurukul system, which was in principle free of cost, except the student would pay a Gurudakshina (a symbolic fee in cash, kind or vow). The emphasis was on moulding their character as much as honing their intellectual faculty. A student in ancient India was identified by the lineage of his teacher. This gave rise to the concept of Guru-Shishya Parampara i.e. mentor-disciple relationship..